*Office of The Sadr Majlis Ansarullah Bharat*
دفتر صدر مجلس انصاراللہ بھارت
Ph. +91-01872-220186, Fax, +91-01872-224186, Mob, +91-9815494687, E-Mail: ansarullahbharat@gmail.com

सारांश खुत्बः जुम्अः सैय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ दिनांक **01.12.2017** मस्जिद बैतुल फ़तूह,मॉर्डन लंदन

## आज (अर्थात 12 रबीउल अव्वल के दिन) यदि वास्तविक ख़ुशी मनानी है

**तो फिर आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सुन्दर आचरण के अनुसार कर्म करके मनाई जा सकती है जहाँ इबादतों के भी स्तर बुलन्द हों, जहाँ तौहीद पर भी सम्पूर्ण विश्वास हो तथा उच्च आचरण के स्तर भी बुलन्द हों**

**आख़िरीन की इस जमाअत के लोगों का दायित्व होता है कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आचरण का अनुसरण करते हुए जैसे सहाबा ने इबादतों के स्तर बुलन्द किए हम भी अपनी इबादतों के स्तर बुलन्द करें तथा केवल सांसारिकता ही में न डूबे रहें।**

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के पश्चात् हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

12 रबीउल अव्वल का दिन वह दिन है जब दुनिया में वह नूर आया जिसको अल्लाह तआला ने सिराज-ए-मुनीर कहा। जिसने पूरे विश्व को आध्यात्मिक प्रकाश प्रदान करना था और किया। जिसने ख़ुदा तआला का शासन दुनिया में स्थापित करना था और किया। जिसने वर्षों के मृतकों को रूहानी जीवन देना था और दिया। जिसने दुनिया को अमन और सलामती प्रदान करनी थी और प्रदान की। जिसको अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि- وَمَا اَرۡسَلۡنٰكَ اِلَّا رَحۡمَةً لِّلۡعٰلَمِيۡنَ अर्थात हमने तुझे दुनिया के लिए केवल रहमत बनाकर भेजा है जो केवल मानव जाति के लिए नहीं अपितु पशु पक्षी सबके लिए रहमत है। जो केवल मुसलमानों के लिए नहीं अपितु ग़ैर मुस्लिमों के लिए भी रहमत था और है और जिसकी शिक्षाएँ प्रलय तक प्रत्येक के लिए रहमत हैं। जिसके विषय में अल्लाह तआला ने आपके मानने वालों को फ़रमाया कि अल्लाह तआला के रसूल में तुम्हारे लिए सुन्दर नमूना है। जैसा कि फ़रमाता है-

لَقَدۡ كَانَ لَكُمۡ فِىۡ رَسُوۡلِ اللّٰهِ اُسۡوَةٌ حَسَنَةٌ لِّمَنۡ كَانَ يَرۡجُوا اللّٰهَ وَالۡيَوۡمَ الۡاٰخِرَ وَذَكَرَ اللّٰهَ كَثِيۡرًا

अर्थात- निःसन्देह तुम्हारे लिए अल्लाह के रसूल में नेक नमूना है, प्रत्येक उस व्यक्ति के लिए जो अल्लाह और निर्णय के दिन पर विश्वास रखता हो तथा अल्लाह को ख़ूब याद करता हो। अतः इस सुन्दर नमूने के अनुसार चले बिना मुसलमान मुसलमान नहीं कहला सकता। हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हमारे लिए तौहीद के क़याम के भी नमूने स्थापित किए, इबादतों के भी नमूने क़ायम किए, उच्च आचरण के भी नमूने क़ायम किए तथा बन्दों के अधिकारों के भी नमूने क़ायम फ़रमाए। परन्तु खेद है कि आजकल के अधिकांश मुस्लिम दावा तो आपकी मुहब्बत का करते हैं परन्तु कर्म इसके उलट हैं जिसकी हमारे आक़ा हज़रत मुहम्मद रसूलल्लाह सल्लाहु अलैहि वसल्लम ने शिक्षा दी थी और जिनके अनुसार आपने कार्य करके दिखाए थे। अधिकांश मुस्लिम देशों में उपद्रव एवं फ़साद की स्थिति है। पाकिस्तान में इस भय के कारण कि उपद्रव की स्थिति एक स्थान से दूसरे स्थान पर न चली जाए कुछ नगरों में आज मोबाईल फ़ोन की सेवा बन्द कर दी गई है। पुलिस की भारी नफ़री प्रत्येक चौक और सड़क

पर खड़ी है। क्या यह उस नबी की ख़ुशी मनाने का तरीक़ा है कि प्रत्येक सज्जन व्यक्ति भयभीत है। हमारे प्यारे आक़ा के नाम पर अहमदियों के विरुद्ध अपशब्द बोलना तथा गालियाँ बकना तो दैनिक नियम है किन्तु आज इसमें भी तीव्रता उत्पन्न हो गई है। कुछ दिन पहले पाकिस्तान के कई नगरों में जो घेराओ और धरने हुए उसने प्रत्येक शरीफ़ नागरिक को दुखी कर दिया था, दिनचर्या बन्द हो गई थी। कोई रोगी हस्पताल नहीं जा सकता था, स्कूल बन्द कर दिए गए बल्कि दुकानें तक बन्द कर दी गईं। कोई व्यक्ति जिसके घर में खाने पीने का सामान नहीं था अपने बच्चों के लिए खाने पीने का सामान नहीं ला सकता था। अरबों रुपए की क़ौम की हानि हुई और यह सब कुछ उन तथाकथित उलमा के हुब्बे रसूल के नारे के कारण हुआ जो रहमतुललिल आलमीन है, जिसने हमें यह शिक्षा दी है कि रास्तों के हक़ अदा करो। किन्तु ये लोग तो रसूल के सम्मान के नाम पर रास्ते बन्द करके लोगों को कठिनाई में डाल रहे थे। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शिक्षा तथा आपके सुन्दर आचरण से इन चीज़ों का दूर का भी वास्ता नहीं है। ये लोग जो चाहें करते रहें परन्तु हम अहमदियों का काम है कि हम आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नमूने के प्रत्येक पहलू को देखें तथा उसके अनुसार कर्म करने का सम्पूर्ण प्रयास करें, अपनी समस्त क्षमताओं एवं शक्तियों के साथ प्रयास करें।

हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने फ़रमाया- इस समय मैं आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सुन्दर आचरण के सम्बंध में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कुछ वृत्तांत बयान करूँगा। अल्लाह तआला से जो आपको प्रेम था उसे बयान फ़रमाते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक स्थान पर फ़रमाते हैं- रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक अस्तित्व के आशिक़ तथा दीवाने हुए और फिर वह पाया जो दुनिया में किसी को नहीं मिला। आपको अल्लाह तआला से इतना प्रेम था कि साधारण लोग भी कहा करते थे कि عشق محمد علی ربہ अर्थात- मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने रब्ब पर आशिक़ हो गया है।

फिर आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अल्लाह तआला से प्रेम और इश्क़ के बारे में बयान फ़रमाते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम आगे फ़रमाते हैं कि जब ये आयतें उतरीं कि शिर्क करने वाले गन्दगी हैं, पलीद हैं, शर्रुल बरिय्या हैं, सुफ़हा हैं तथा शैतान की संतान हैं तथा उनके पूज्य आग का ईंधन हैं और नर्क में हैं तो अबू तालिब ने आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बुलाकर कहा कि ऐ मेरे भतीजे, अब तेरे कठोर शब्दों के कारण लोग बड़े आक्रोषित हो गए हैं तथा संभावना है कि तुझको नष्ट कर दें तथा साथ ही मुझको भी। तू ने उनके बुद्धिमान लोगों को मूर्ख कहा है तथा उनके पूर्वजों को शर्रुल बरिय्या कहा है तथा उनके आदरणीय पूज्यों का नाम हीज़म और नर्क तथा आग का ईंधन रखा तथा उन सबको गन्दगी और शैतान की संतान तथा पलीद ठहराया। मैं तुझे शुभ चिंतक होने की भावना से कहता हूँ कि अपनी भाषा को थाम तथा बुरे शब्दों से रुक जाओ अन्यथा मैं क़ौम के मुक़ाबले का सामर्थ्य नहीं रखता। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उत्तर देते हुए कहा कि ऐ चचा! यह विकट भाषा नहीं है बल्कि वास्तविकता की अभिव्यक्ति है तथा मूल बात का इसके उचित समय पर बयान है और यही तो काम है जिसके लिए मैं भेजा गया हूँ यदि इसके कारण मुझे मरना भी पड़े तो मैं प्रसन्नता के साथ इस मौत को स्वीकार करता हूँ, मेरा जीवन इसी काम के लिए समर्पित है, मैं मौत के भय से सत्य को प्रकट करने से नहीं रुक सकता। और ऐ चचा! यदि तुझे अपनी दुर्बलता और अपनी कठिनाई की चिंता है तो तू मुझे अपनी शरण में रखने से हट जा, ख़ुदा की क़सम मुझे तेरी कोई आवश्यकता नहीं, मैं अल्लाह की बातों को पहुंचाने से कभी नहीं रुकूंगा, मुझे अपने मौला के आदेश अपनी जान से अधिक प्यारे हैं। ख़ुदा की क़सम यदि में इस मार्ग में मारा जाऊँ तो चाहता हूँ कि बार बार जीवित होकर सदैव इस मार्ग में मरता रहूँ। यह भय का अवसर नहीं अपितु मुझे इसमें अत्यंत आनन्द प्राप्त होता है कि उसकी राह में दुःख उठाऊँ। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम यह तक़रीर कर रहे थे तथा चेहरे पर सच्चाई तथा नूर से भरी हुई करुणा प्रकट हो रही थी और जब आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम यह तक़रीर पूरी कर चुके तो सत्य के प्रकाश को देखकर सहसा अबू तालिब के आँसू जारी हो गए तथा उनसे कहा कि मैं

तेरी इस उच्च स्तरीय अवस्था से अवगत न था, तू और ही रंग में तथा और ही शान में है, जा अपने काम में लगा रह, जब तक मैं जीवित हूँ जहाँ तक मेरी शक्ति है, मैं तेरा साथ दूँगा।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- आज हम अहमदियों पर यह आरोप लगाया जाता है कि मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलाम को मानने के कारण ये काफ़िर हैं। यह घटना जिसका मैंने अभी वर्णन किया है, यह हम इतिहास में पढ़ते और सुनते हैं किन्तु जिस भावना और दिल की स्थिति से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इसको बयान फ़रमाया है उससे आपके इश्क़ मुहम्मद-ए-अरबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की भी अभिव्यक्ति होती है तथा इसके साथ साथ फिर ख़ुदा तआला से प्रेम के रास्ते भी नज़र आते हैं जो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हमें दिखाए। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इश्क़ में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं-

मैं सदैव अदभुत दृष्टि से देखता हूँ कि यह अरबी नबी जिसका नाम मुहम्मद है सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम, हज़ार हज़ार दरूद व सलाम उस पर, यह कितने उत्तम स्तर का नबी है। इसके उत्म स्तर की सीमा ज्ञात नहीं हो सकती तथा इसके पवित्र प्रभाव का अनुमान लगाना इंसान का काम नहीं। खेद है कि जैसा परिचय का हक़ है, इसके स्तर को नहीं पहचाना गया। वह तौहीद जो दुनिया से गुम हो चुकी थी वही एक पहलवान है जो दोबारा उसको दुनिया में लाया। उसने ख़ुदा से अत्यधिक प्रेम किया तथा अत्यंत रूप से मानव जाति के साथ सहानुभूति में उसने जान खपाई। इस कारण से ख़ुदा ने जो उसके दिल के भेद से अगवत था उसको समस्त नबियों तथा समस्त अव्वलीन व आख़िरीन पर प्राथमिकता प्रदान की तथा उसकी मुरादें उसके जीवन में उसको दीं। वही है जो स्रोत है प्रत्येक कृपा का तथा जो इसकी कृपा को स्वीकार किए बिना किसी लाभ का दावा करता है वह इंसान नहीं है अपितु शैतान की संतान है, क्यूँकि प्रत्येक फ़ज़ीलत की कुंजी उसको दी गई है तथा प्रत्येक मअरिफ़त का भंडार उसको प्रदान किया गया है। जो उसके माध्यम से नहीं पाता वह सम्पूर्ण रूप से भाग्य हीन है। हम क्या चीज़ हैं और हमारा मूल्य क्या है, हम नेअमत के इंकारी होंगे यदि इस बात को स्वीकार न करें कि वास्तविक तौहीद हमने उसी नबी के माध्यम से पाई तथा जीवित ख़ुदा से परिचय हमें उसी सम्पूर्ण नबी के माध्यम से तथा उसके नूर से मिला है और ख़ुदा से बात चीत तथा सम्बोधन का वरदान भी जिसके द्वारा हम उसका चेहरा देखते हैं, उसी नबी के माध्यम से हमें प्राप्त हुआ है। उस हिदायत के सूर्य की किरणें धूप की भांति हम पर पड़ती हैं तथा उसी समय तक हम प्रकाशित रह सकते हैं जब तक कि हम उसके सामने खड़े हैं।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं- मैं बड़े ज़ोर से कहता हूँ कि चाहे कैसा ही दुष्ट शत्रु हो तथा चाहे वह ईसाई हो कि आर्य, जब वह इन प्रस्थितियों को देखेगा कि जो आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पहले अरब की थी और फिर उस परिवर्तन पर दृष्टि डालेगा जो आपकी शिक्षा और प्रभाव से पैदा हुई तो उसे सहसा आपकी सच्चाई की गवाही देनी पड़ेगी। मोटी सी बात है कि क़ुर्आन मजीद ने उस पहली अवस्था का तो यह नक़शा खींचा है कि- وَيَأْكُلُونَ كَمَا تَأْكُلُ الْأَنْعَامُ अर्थात उस प्रकार खाते हैं जिस प्रकार पशु खाते हैं, पशुओं वाली अवस्था है। यह तो उनकी इंकार के समय अवस्था थी और फिर जब आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के शुभ प्रभाव ने उनमें परिवर्तन पैदा किया तो उनकी ऐसी अवस्था हो गई कि- يَبِيتُونَ لِرَبِّهِمْ سُجَّدًا وَقِيَامًا अर्थात वे अपने रब्ब के समक्ष सजदा करते हुए तथा क़्याम करते हुए रातें काट देते हैं।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- अतः पहलों से मिलने वाली इस आख़िरीन की जमाअत के लोगों का भी कर्त्तव्य है कि उस सुन्दर आचरण का अनुसरण करते हुए जैसे सहाबा ने इबादतों के स्तर बुलन्द किए, हम भी अपनी इबादतों के स्तर बुलन्द करें तथा केवल दुनियादारी में ही डूबे न रहें। ज़ैली तंज़ीमें तथा जमाअती निज़ाम यह रिपोर्ट देते हैं कि हमारे इतने प्रतिशत नमाज़ पढ़ने वाले हो गए, चालीस प्रतिशत, पचास प्रतिशत, साठ प्रतिशत। हम तो जब तक शतप्रतिशत इबादत करने वाले पैदा न कर लें हमें चैन से नहीं बैठना चाहिए तथा केवल निज़ाम नहीं बल्कि प्रत्येक व्यक्ति को आत्म निरीक्षण करना चाहिए कि मैं किस अवस्था में हूँ।

फिर सत्य और सच्चाई में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का क्या तरीक़ा था, आपके घोर शत्रु नज़र बिन हारिस की गवाही सुनें। एक बार क़ुरैश के सरदार एकत्र हुए जिनमें अबू जहल तथा नज़र बिन हारिस भी शामिल थे। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में जब किसी ने यह कहा कि इन्हें जादूगर घोषित कर दिया जाए अथवा झूठा घोषित कर दिया जाए तो नज़र बिन हारिस खड़ा हुआ तथा कहने लगा कि ऐ क़ुरैश के लोगो! ऐसा मामला तुम्हारे सामने आ गया है जिसके मुक़ाबले के लिए तुम कोई युक्ति नहीं ला सके। मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तुम में एक जवान लड़के थे और तुम्हें सबसे बढ़कर प्यारे थे, सबसे अधिक सच बोलने वाले थे तुम में, सबसे अधिक अमानतदार थे। अब तुम कहते हो कि वह जादूगर है, उनमें जादू की कोई बात नहीं, हमने जादूगर देखे हुए हैं। तुमने कहा कि वह काहिन है, हमने भी काहिन देखे हुए हैं, वे काहिन कदापि नहीं हैं। तुमने कहा वह कवि है, हम कविता के समस्त रूप जानते हैं, वह कवि नहीं है। तुमने कहा कि वह मजनून है, उनमें जनून की कोई निशानी नहीं। ऐ क़ुरैश के लोगो! फिर से विचार कर लो, तुम्हारा वास्ता एक बहुत बड़े मामले से है।

फिर अबू जहल आपकी सच्चाई का कभी इंकार नहीं कर सका। उसने कहा कि मैं तुम्हें झूठा नहीं कहता परन्तु जो शिक्षा तुम लाए हो वह अनुचित है क्यूँकि तुम हमारे बुतों के विरुद्ध बोल रहे हो। अबू सुफ़यान ने भी हरक़ुल राजा के दरबार में यही कहा था कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कभी झूठ नहीं बोला तथा सदैव सच बोलने की प्रेरणा देते हैं। इस प्रकार दुश्मन से दुश्मन भी आपको कभी झूठा नहीं कह सका तथा यही आपके सच्चा होने का बहुत बड़ा प्रमाण है। यहूदी आलिम ने आपके चेहरे को देखकर कहा था कि यह झूठे का चेहरा नहीं हो सकता।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया-अतः आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अनुसरण करते हुए अहमदियों को अपनी सच्चाई के स्तर बुलन्द करने का सदैव प्रयास करना चाहिए ताकि इस्लाम की सुन्दर शिक्षा फैलाने में सरलता हो। तबलीग़ के लिए आवश्यक है कि कथनी और करनी में अन्तर न हो। यदि कर्म में सच्चाई नहीं तो लोग दीन की शिक्षा को भी झूठा समझेंगे। ख़ुदा तआला की ज़ात एक सच्चाई है, दीन-ए-इस्लाम एक सच्चाई है, इस सच्चाई को फैलाना तथा सत्य के द्वारा फैलाना, आज हमारा काम है।

हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने फ़रमाया- अतः आज (अर्थात 12 रबीउल अव्वल के दिन) यदि वास्तविक ख़ुशी मनानी है तो फिर आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सुन्दर आचरण के अनुसार कर्म करके मनाई जा सकती है जहाँ इबादतों के भी स्तर बुलन्द हों, जहाँ तौहीद पर भी सम्पूर्ण विश्वास हो तथा उच्च आचरण के स्तर भी बुलन्द हों। यदि यह नहीं तो हममें तथा ग़ैर में कोई अन्तर नहीं। वे लोग जो बिखरे हुए हैं तथा अस्थाई लीडर और तथाकथित आलिमों के पीछे चलकर लोगो के लिए तंगियों के सामान कर रहे हैं, उनमें और हममें कोई अन्तर नहीं होगा यदि हम आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सुन्दर आचरण का अनुसरण नहीं कर रहे। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत का अर्थ यही है कि हम प्रत्येक कार्य में आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सुन्दर नमूने को सामने रखें। अल्लाह करे कि इसकी सबको तौफ़ीक़ मिले।

ख़ुत्बः जुम्अः के अन्त में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने मुकर्रमः सिस्टर सलमा ग़नी साहिबा ऑफ़ फ़लाडिल फ़िया, अमरीका की जनाज़ें की नमाज़ ग़ायब पढ़ने की घोषणा फ़रमाई तथा आपके सद्गुणों का वर्णन फ़रमाया।



**TOLL FREE NO: 180030102131**